# 5

## विष सम विषयन.....

विष सम विषयन को टार टार, गुरु कहत सीख इम बार बार ।।
इन सेवत अनादि दुख पायो, जनम मरण बहु धार–धार ।।
गुरु कहत सीख.....
कर्माश्रित बाधा जुत फांसी, बन्ध बढ़ावन द्वन्दकार ।।
गुरु कहत सीख.....
ये न इन्द्रिय के तृप्ति हेतु, जिन तृष न बुझावत क्षार वार ।।
गुरु कहत सीख.....
इनमें सुख कल्पना अबुध के बुधजन मानत दुख प्रचार ।।
गुरु कहत सीख.....
इन तजि ज्ञान पियूप चखो नित 'दौल' लहो भव वार पार ।।
गुरु कहत सीख...

सदगुरू बारम्बार शिक्षा देते हैं कि हे जीव! ये विषय–भोग विष के समान हैं, इनको छोड़ो! इनके सेवन से ही तुमने अनादिकाल से जन्म–मरण धारण कर–करके अनंत दुख उठाया है।।१।।

ये इन्द्रिय–विषय कर्म के आधीन हैं, बाधा सहित हैं, बन्ध स्वरूप हैं, बन्ध बढ़ाने वाले हैं और दुविधा उत्पन्न करने वाले हैं।।२।।

जिस प्रकार खारा पानी प्यास नहीं बुझाता है उसी प्रकार ये इन्द्रियजन्य–विषयभोग भी आत्मा को कभी तृप्त नहीं करते।।३।।

इनमें सुख की कल्पना अज्ञानी जीव को ही होती है, ज्ञानी जीव तो इनसें दुख की वृद्धि मानते हैं।।४।।

अत: कविवर दौलतरामजी कहते हैं कि जिन जीवों ने इन इन्द्रिय–विषयों का त्याग करके ज्ञानरूपी अमृत का स्वाद लिया है, उन्होंने ही संसार सागर को पार किया है।।५।।